छुटकी और आड़ू का पेड़

पीच ब्लॉसम लिंग परिवार की दूसरी संतान थी. कागज़ और रंग लिये हुए वह बगीचे में धूप-घड़ी के पास बैठी आड़ू के एक पेड़ का चित्र बना रही थी.

उसने ब्रुश की नोक को अपने होंठों पर लगा कर थोड़ा सा गीला किया. फिर उसे हरे रंग से छुआ और कोमलता से कागज़ पर रंग लगाया.

चित्र बनाते-बनाते उसने कई बार आड़ू के पेड़ को देखा जो धान के खेत के पास लगा हुआ था.

उस आड़ू के पेड़ के परे धान के जो खेत थे उन्हें हल चला कर समतल कर दिया गया था. धान के अंकुरों के प्रतिरोपण के लिए वह खेत तैयार थे.

वह बहुत ही अद्भुत दिन था. शीघ्र ही नदी का पानी एक पतली नहर द्वारा उन प्यासे खेतों में छोड़ा जाने वाला था. पानी के इकट्ठा होते ही खेत धान के नये अंकुरों को ग्रहण कर पायेंगे.

उसके पिता और भाई टखनों तक गहरे कीचड़ में काम करेंगे और उन लोगों की सहायता और संचालन करेंगे जो गीली मिट्टी में अंकुरों को रोपित करेंगे. फिर धान के पौधे फसल काटने के समय तक बड़े होंगे.

फसल कटते ही लिंग परिवार में अच्छी वस्तुएं आएँगी : खाना, कपड़े....

और उसके पिता उसके भाई, हो, से कहेंगे, “इस बार अच्छी फसल हुई. अगली फसल काटने के समय तक तुम अपने अध्यापक के पास पढ़ने जाओगे. एक दिन तुम बड़े विद्वान बनोगे.”

वह पीच ब्लॉसम से कहेंगे, “छुटकी, यह सुंदर रेशम का कपड़ा तुम्हारी सिलाई के लिये है. और अब एक शिक्षक से तुम सैमसैन बजाना सीखोगी और यह हैं चित्रकारी के लिये रंग.”

लेकिन पीच ब्लॉसम से किसी उत्तर की अपेक्षा उन्हें नहीं होगी क्योंकि वह इतनी शर्मीली थी कि कुछ बोलती ही न थी.

जब से उसे याद था तब से वह सहमी-सहमी थी, नये मित्रों को देखकर सहम जाती थी, नई जगहों में सहम जाती थी.

“किसी बात से डरने की आवश्यकता नहीं है,” उसका भाई, हो, ने कहा था. लेकिन पीच ब्लॉसम बोलने का साहस कर ही न पाती थी.

अब उसका भाई बगीचे में आया और खड़े-खड़े उसकी चित्रकला देखने लगा.

"तुम्हारा पेड़ तो इतना सच्चा लगता है कि एक किंगफ़िशर आकर इसकी डाल पर बैठ जाए. मैंने सुना था कि एक चित्र हज़ार शब्दों समान बात कह देता है. तुम्हारा चित्र देख कर लगता है कि वह कथन सत्य ही है. जो सुंदरता तुमने चित्र में दर्शाई है उसका वर्णन मैं शब्दों में कभी न कर पाता."

पीच ब्लॉसम को बहुत प्रसन्नता हुई. हो चलता हुआ बगीचे से बाहर आ गया और फिर भागता हुआ खेतों की ओर चला गया.

फिर उसने अपने पिता को खेतों की ओर भागते देखा.

दो खेतों के बीच चलने के लिए जो पतला रास्ता था उस पर वह दौड़े जा रहे थे. वह अपने हाथ हिला रहे थे और चिल्ला कर कुछ कह रहे थे. उनकी आवाज़ आई. वह कह रहे थे -

“नदी का पानी नहर में नहीं आ रहा.”

“पानी नहीं.....”

उसकी माँ घर से बाहर आई और खेतों की ओर देखने लगी. “वह चिल्ला क्यों रहे हैं?” वह बोली.

फिर धान के खेतों से आवाज़ आई -

“पानी नहीं आ रहा....”

“ऐसा नहीं हो सकता,” उसकी माँ ने कहा. “नदी में तो बहुत पानी है.” उसने अपने हाथ अपने सीने पर बाँध लिए. “पानी के बिना तो धान के अंकुर प्रतिरोपित नहीं किये जा सकते. प्रतिरोपण के बिना तो अंकुर मर जायेंगे. धान के बिना....”

धान के बिना.

पीच ब्लॉसम काँप गयी. क्योंकि उसे याद आया कि बहुत वर्ष पहले एक बार धान नहीं हुआ था. तब नदी में पानी कम था और वर्षा भी नहीं हुई थी. घाटी के सब लोग ड्रैगन समान धीरे चलने वाली रेल में सवार हो कर नगर की ओर चले गये थे. वहां उन्हें नया रोज़गार मिल गया था. जब ऐसा हुआ था तो हो स्कूल न जा पाया था और उसे चित्रकारी के लिये रंग न मिले थे. कई बार बहुत कम खाना मिलता था और जीवन में कोई ख़ुशी न थी. सब लोग गाँव लौट जाने की प्रतीक्षा में थे.

खेतों के बीच में बने पतले रास्ते से उसके पिता लौट आये. उनके बोलने से पहले ही पीच ब्लॉसम उनके गुस्से को भांप गयी.

“उत्तर दिशा में जो मूर्ख पड़ोसी रहता है उसने अपने खेतों में नदी का पानी भर लिया है. उसके धान के अंकुर रोपित भी हो गये हैं. लेकिन जिस फाटक से पानी हमारी नहर में आता है उसे खोला ही नहीं.”

उन्होंने अपने दोनों हाथ आपस में टकराए. “मैं उसके खेत में गया था और मैंने स्वयं फाटक देखा था. वह बंद था. मैंने हो को उसके पास यह पता लगाने के लिये भेजा है कि ऐसा क्यों है.”

वह तेज़-तेज़ सांस ले रहे थे. “पीढ़ियों से हमारे खेतों में पानी बिना रुकावट के आता रहा है. अब यह आदमी यहाँ आकर ऐसे व्यवहार कर रहा है कि जैसे कि वह कोई बड़ा हाकिम है.....”

वह दनदनाते हुए घर के भीतर गये. माँ उनके पीछे अंदर गई. पीच ब्लॉसम धूप-घड़ी के पास रुककर हो की प्रतीक्षा करने लगी.

जब वह वापस आया तो पीच ब्लॉसम समझ गई की वह शुभ समाचार लाया था, क्योंकि वह बड़े अभिमान से चल रहा था.

वह आया, उसके चेहरे पर बड़ी मुस्कान थी.

“मैं पड़ोसी के घर गया था,” उसने कहा. “मैंने ज़ोर से दरवाज़ा खटखटाया था और एक मोटा आदमी बाहर आया था. मैंने कहा कि मैं उसके स्वामी से बात करना चाहता था. लेकिन वह घर में नहीं थे. मैंने उसे कहा कि एक कागज़ मुझे दे, जिस पर मैं उसके स्वामी के लिये एक सन्देश लिख दूँ.”

पीच ब्लॉसम ने महसूस किया कि हो गर्व से अपनी विद्वता दिखा रहा था.

हो बोलता जा रहा था, "उस आदमी को संदेश देने से पहली ही हमारे पड़ोसी लौट आये. उन्होंने एक पिंजरा पकड़ा हुआ था जिसमें एक पक्षी था, एक लार्क."

तभी हो के पिता बगीचे में आ गये.

"तुम ने उन्हें सन्देश दे दिया?" पिता ने पूछा.

"हाँ, मैंने सन्देश दे दिया," हो ने कहा.

"फिर क्या हुआ?" पिता ने पूछा.

"फिर हमने कई विषयों पर बात की; काली ड्रैगनफ्लाईस के बारे में, उनके सहन में जो आड़ू का पेड़ है उसके बारे में और पिंजरे में बंद लार्क के बारे में."

पिता खड़े-खड़े खेतों की ओर देख रहे थे.

"निश्चय ही सब ठीक हो जाएगा. निश्चय ही वह नहर का फाटक खोल देगा. अगर शाम तक ऐसा नहीं हुआ तो हो और मैं वहां जायेंगे और हम स्वयं उस फाटक को खोल देंगे जो नदी के पानी को रोके हुए है. हम कल सूर्य उदय से पहले ही जायेंगे."

उस रात पीच ब्लॉसम सोने के लिये बिस्तर में लेट गई. फर्श पर चाँद के प्रकाश से जो पैटर्न बन रहे थे, उन्हें देखती रही. नहर में पानी नहीं आया था. वह अनुमान लगाने लगी कि सुबह होने पर क्या होगा.

उसे लगा कि वह थोड़ी देर ही सोयी थी कि माँ के रसोई में काम करने की आवाज़ आई. वह चावल पका रही थी. अभी अँधेरा ही था. वह उठी और अँगीठी में जलते कोयलों के ऊपर हाथ सेंकने लगी.

जल्दी ही चावल बन गये. हो और उसके पिता ने खाना खाया.

चावल का आखिरी दाना खाकर पिता ने अपना कटोरा मेज़ पर रख दिया.

"समय हो गया है," उन्होंने कहा. "सूर्य उदय से पहले हमें चल देना चाहिए."

पीच ब्लॉसम और उसकी माँ दरवाज़े से देखती रहीं. बाहर अभी भी अँधेरा था और हो और उसके पिता दो धुंधली आकृतियों जैसे दिख रहे थे.

घाटी में जब सब सो रहे थे, दोनों संकरे रास्ते पर चलते हुए पड़ोसी के खेतों में पहुँच गये.

लेकिन तब पीच ब्लॉसम ने देखा कि घाटी में हर कोई नहीं सोया हुआ था, क्योंकि तीन धुंधली आकृतियाँ अँधेरे में आ रहीं थीं. तीनों के पास लाठियाँ थीं. वह उसके पिता और भाई पर टूट पड़े. खूब शोर और झगड़ा हुआ.

उसने अपने हाथों में अपना चेहरा छिपा लिया. दूर कुत्ते भौंकने लगे और पक्षी भी जाग गये. उसने अपनी माँ का कोमल हाथ अपने कंधे पर महसूस किया.

“रो मत, छुटकी. उन्हें कोई चोट नहीं लगी है. ऊपर देखो. वह तो वापस आ रहे हैं.”

हो और उसके पिता लंगडाते हुए बगीचे में आ गये.

“पड़ोसी के घर से तीन लोग आये थे,” पिता ने चिल्ला कर कहा. “उन्होंने मेरी बात सुनी भी नहीं. हम ने उन्हें बताया की हम तो सिर्फ नदी का पानी नहर में छोड़ने के लिए आये थे और उस पानी पर हमारा भी अधिकार था.”

“उन्होंने कहा कि, ईमानदार व्यक्तियों की तरह, हम दिन के समय क्यों नहीं आए थे,” हो बोला.

“ईमानदार व्यक्ति!” पिता चिल्लाये. “मैंने उन से कहा कि हमसे अधिक ईमानदार लोग उन्हें पूरे प्रदेश में नहीं मिलेंगे.”

“लेकिन उन्होंने हमारी बात न सुनी,” हो ने अपना सर मलते हुए कहा.

“और वह तीन तो सात लोगों समान ताकतवर थे,” पिता बोले.

"धान नहीं होगा...." माँ ने धीमे से कहा.

पीच ब्लॉसम ने माँ को दिलासा देने के लिए उसका हाथ सहलाया.

सूर्य उदय होने तक वह यूहीं दुःखी रहे. फिर घाटी में लोग नींद से जाग गये और, लिंग परिवार के पुरुषों को छोड़ कर, सब आदमी खेतों में काम करने के लिये चले गये.

जब वह बातें कर रहे थे, पीच ब्लॉसम चुपके से वहां से चली गयी. उसने अपना चित्र और रंग वहीं पाए जहां वह छोड़ गयी थी. उसने भूरा रंग निकाला और ब्रुश से चित्र को रंगने लगी. इस बार वह तेज़ी से ब्रुश चला रही थी. कागज़ के निचले भाग में, पहले पेड़ के नीचे, उसने एक दूसरा पेड़ बनाया; यह वही पेड़ था जो धान के खेत के पास था - और पेड़ विकृत था और सूख गया था.

पीच ब्लॉसम ने रंगों के सूखने की प्रतीक्षा की. फिर उसने उस कागज़ को लंबी नली समान गोल लपेट लिया और चुपचाप घर से चल दी.

कुछ पलों के लिए वह बगीचे में खड़ी रही और पड़ोसी के घर के विषय में सोचती रही. वह जानती थी कि उसे वहां जाना ही होगा. अपने पिता और अपनी माँ और अपने भाई, हो, के लिये उसे ऐसा करना ही होगा. पिंजरे में बंद पक्षी समान उसका दिल ज़ोर से और तेज़ी धड़क रहा था.

वह इतने ध्यान से चल रही थी कि रास्ते में कोई कंकड़ या टहनी भी नहीं हिली. चौड़े पत्थरों पर चलती वह सड़क तक आ गई. फिर वह जल्दी-जल्दी चलने लगे. उसे डर था की उसे घर में ना पाकर कोई उसे वापस आने को न कह दे.

वह पड़ोसी के घर पहुँच गयी और उसने बगीचे का फाटक खोला. पड़ोसी सहन में ही था. उसका नन्हा कुत्ता उसके पाँव के पास बैठा था.

पीच ब्लॉसम थोड़ा सहमी हुई थी.

उसने झुककर पड़ोसी का अभिवादन किया और हाथ में पकड़ा कागज़ उसकी ओर बढ़ाया.

"यह क्या है?" उसने कहा. "यह क्या है?" उसने लिपटे हुए कागज़ को खोला. जब पीच ब्लॉसम ने कोई उत्तर न दिया तो वह उसकी ओर जिज्ञासा-पूर्वक देखने लगा. "यह चित्र मुझे अच्छा लगा," उसने कहा. "यह बहुत ही उत्तम है. मुझे लगता है इसका कुछ अर्थ भी है." वह प्रतीक्षा करने लगा.

पीच ब्लॉसम ने अपने गले के सामने अपने हाथ बाँध लिये और नीचे धरती की ओर देखने लगी.

पड़ोसी ने फिर पूछा, "तुम कोई उत्तर नहीं दे रही, बच्ची. क्या तुम बोल नहीं सकती?"

उसने अपना सिर हिलाया. शर्म से उसका चेहरा लाल हो गया.

पड़ोसी ने चित्र को फिर से देखा. “यह आड़ू का पेड़ तो बहुत सुंदर है. जो पेड़ मेरे सहन में लगे हैं उनसे भी अधिक सुंदर है. यह एक धान के खेत के पास लगा है. शायद यह तुम्हारी ज़मीन में लगा है.”

पीच ब्लॉसम ने झुककर हामी भरी.

पड़ोसी ने एक भौंह ऊपर उठा ली. “और चित्र में नीचे भी वही पेड़ दिखाई दे रहा है. यह एक खेत के पास है जिसे धान के अंकुर लगाने के लिये तैयार किया गया है. पेड़ सूख कर मर गया है, एक ढांचा भर लगता है. लेकिन ऐसा क्यों हुआ?” उसने अपनी दाड़ी के गिने-चुने बालों को सहलाया.

पीच ब्लॉसम ने बोलने का प्रयास किया लेकिन उसके मुँह से कोई शब्द ही नहीं निकले. वह सिर्फ रुक कर प्रतीक्षा कर सकती थी.

उसके आँखें भर आईं क्योंकि वह कुछ बोल न पा रही थी और उसका दिल फटा जा रहा था.

“ओहो,” वह बोला. “मुझे तो इस चित्र में एक कहानी दिखाई दे रही है. यह पेड़ तुम्हारे धान के खेत के पास है. यह पेड़ सूख जाएगा क्योंकि तुम्हारे खेत में पानी नहीं है. और चूँकि यह चित्र तुम मेरे पास लाई हो तो इसका अर्थ है कि इसका मेरे साथ कोई संबंध है. क्या ऐसा संभव है कि मेरे खेत की नहर का पानी तुम्हारी नहर की ओर नहीं छोड़ा गया?”

पीच ब्लॉसम तुरंत तीन बार झुकी.

“क्या यही सन्देश तुम्हारे भाई ने लिख कर मेरे लिये यहाँ रख छोड़ा था?”

वह मुस्काई.

बात को समझते हुए उसने अपना सिर हिलाया. “अब अनपढ़ होने से ऐसा ही होता है,” उसने कहा. “हमारे घर में सब अनपढ़ हैं. जब मैं छोटा लड़का था तब मैं बीमार रहता था और मुझे कुछ पढ़ाया नहीं गया. और अकसर मुझे इस बात का खेद हुआ है.”

“तो क्या वह तुम्हारे पिता और भाई थे जो सूर्य उदय से पहले मेरे खेत में आये थे, अपनी नहर में पानी छोड़ने के लिये?”

उसने ताली बजाई और एक मोटा आदमी बगीचे से भागता हुआ आया.

पड़ोसी ने उस से नरमी से बात की.

“तुम ने कहा था कि आज बहुत सवेरे चोर आये थे. ऐसा नहीं है. दक्षिण से हमारे पड़ोसी आये थे ताकि वह अपने खेतों में पानी छोड़ सकें. जल्दी उनकी नहर में पानी छोड़ो.”

फिर वह पीच ब्लॉसम की ओर घूमा.

“एक पड़ोसी का दूसरे के पास बिना किसी भय के जाना अच्छी बात होती है,” उसने कहा.

पीच ब्लॉसम को बिल्कुल डर न लग रहा था; प्रसन्नता से उसका मन गाने को कर रहा था.....

जब वह झटपट घर लौट रही थी, उसने देखा कि धान के खेत में नदी का पानी भरता जा रहा था.

जैसे ही वह घर पहुंची, हो चिल्लाया.

"हम धान रोपने के लिये तैयार हैं. हम धान रोपने के लिये तैयार हैं."

उसके पिता ने पीच ब्लॉसम की ओर जिज्ञासा से देखा. "तुम कहाँ गयी थी, छुटकी?"

छुटकी ने पिता की ओर देखा.

"मैं हमारे पड़ोसी से मिलने गई थी," उसने धीमी आवाज़ में कहा.

उसने धान के अंकुरों का प्रतिरोपण देखा.

उसके पिता और भाई टखनों तक गहरे कीचड़ में खड़े थे, तभी उत्तर दिशा में रहने वाला पड़ोसी आया, तीन आदमी उसके पीछे एक कतार में आ रहे थे.

“आपका नालायक पड़ोसी धान के पौधे लगाने में आपकी सहायता करने के लिये अपने तीन नालायक आदमियों को अपने साथ लाया है,” उसने कहा.

वह सब एक साथ काम करने लगे; और उन तीन आदमियों ने कठोर मेहनत की और सात आदमियों के समान काम किया.

उस दिन पीच ब्लॉसम ने सुंदर रेशम के कपड़े की सिलाई की, और एक शिक्षक ने घर आकर उसे सैमसैन बजाना सिखाया.

उसने काम करते हुए लोगों को बातें करते और हँसते हुए सुना. धान के खेतों पर बहती शीतल हवा उसके चेहरे को छू रही थी.

उस रात जब उसके पिता खेतों से वापस आये तो वह बोले, “तुम्हारे चित्र ने वह काम कर दिया जो शब्द न कर पाए थे, छुटकी. तुमने सुंदर चित्र बनाया था.”

पीच ब्लॉसम ने अपने रंग वहां संभाल कर रख दिए जहां वह कल उन्हें खोज सकती थी. फिर प्रसन्नता से एक गीत गाते हुए माँ की सहायता करने रसोई में चली गयी.

समाप्त